StarzSpeak

# DURGA CHALISA IN HINDI

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी॥ ( 1 )

निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी॥ ( 2 )

शशि ललाट मुख महाविशाला। नेत्र लाल भृकुटि विकराला॥ ( 3 )

रूप मातु को अधिक सुहावे। दरश करत जन अति सुख पावे॥ ( 4 )

तुम संसार शक्ति लै कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना॥ ( 5 )

अन्नपूर्णा हुई जग पाला। तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥ ( 6 )

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥ ( 8 )

रूप सरस्वती को तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥ ( 9 )

धरयो रूप नरसिंह को अम्बा। परगट भई फाड़कर खम्बा॥ ( 10 )

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो। हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥ ( 11 )

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाहीं॥ ( 12 )

क्षीरसिन्धु में करत विलासा। दयासिन्धु दीजै मन आसा॥ ( 13 )

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी॥ ( 14 )

मातंगी अरू धूमावति माता। भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥ ( 15 )

श्री भैरव तारा जग तारिणी। छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी॥ ( 16 )

केहरि वाहन सोह भवानी। लांगुर वीर चलत अगवानी॥ ( 17 )

कर में खप्पर खड्ग विराजै ।जाको देख काल डर भाजै॥ ( 18 )

सोहै अस्त्र और त्रिशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला॥ ( 19 )

नगरकोट में तुम्हीं विराजत। तिहुँलोक में डंका बाजत॥ ( 20 )

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे। रक्तबीज शंखन संहारे॥ ( 21 )

महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघ भार मही अकुलानी॥ ( 22 )

# DURGA CHALISA IN HINDI

रूप कराल कालिका धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा॥ ( 23 )
परी गाढ़ सन्तन र जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब॥ (24 )
अमरपुरी अरु बासव लोका। तब महिमा सब रहें अशोका॥ (25 )
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नरनारी॥ (26 )
प्रेम भक्ति से जो यश गावें। दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥ ( 27 )
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्ममरण ताकौ छुटि जाई॥ ( 28 )
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी॥ ( 29 )
शंकर आचारज तप कीनो। काम अरु क्रोध जीति सब लीनो॥ ( 30 )
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को। काहु काल नहिं सुमिरो तुमको॥ ( 31 )
शक्ति रूप का मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछितायो॥ ( 32 )
शरणागत हुई कीर्ति बखानी। जय जय जय जगदम्ब भवानी॥ ( 33 )
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥ ( 34 )
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥ ( 35 )
आशा तृष्णा निपट सतावें। मोह मदादिक सब बिनशावें॥ ( 36 )
शत्रु नाश कीजै महारानी। सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥ ( 37 )
करो कृपा हे मातु दयाला। ऋद्धिसिद्धि दै करहु निहाला॥ ( 38 )
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ । तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ ॥ ( 39 )
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै। सब सुख भोग परमपद पावै॥ ( 40 )

**देवीदास शरण निज जानी। कहु कृपा जगदम्ब भवानी॥**